ऊँटों के नवजात बच्चों की समुचित देखभाल

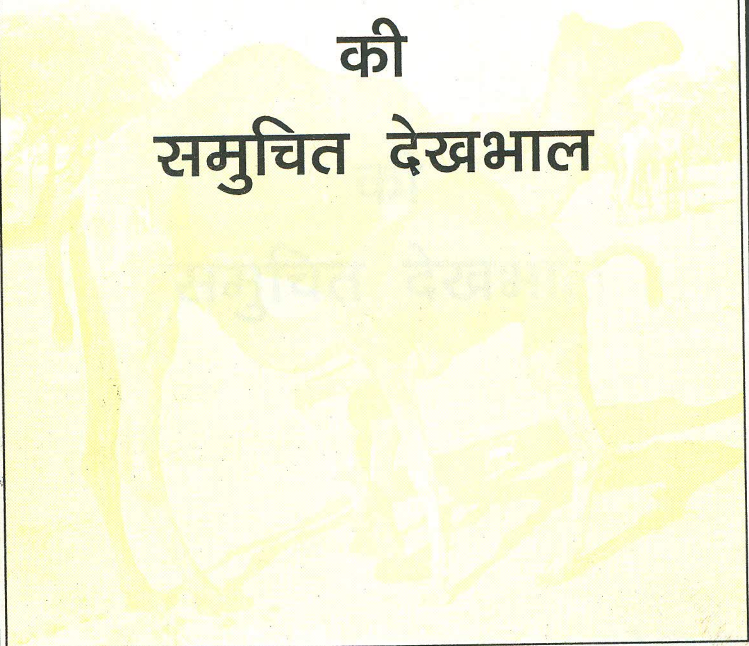

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

पोस्ट बॉक्स नं. 07

बीकानेर-334 001 (राजस्थान)

© राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

प्रकाशक
निदेशक
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
पोस्ट बॉक्स नं. 07
बीकानेर – 334001 (राज.)

मुद्रक
कल्याणी प्रिण्टर्स
माल गोदाम रोड,
बीकानेर–334001
दूरभाष : 526890

ऊँटों के नवजात बच्चों की समुचित देखभाल :

ऊँटों में प्रजनन दर धीमी होती हैं। इसका मुख्य कारण लम्बा गर्भकाल है। फलस्वरूप एक सांडनी से दो वर्ष में एक बच्चे की प्राप्ति होती है। उपलब्ध आंकड़ों से देखा गया है कि ऊँट के बच्चों में मृत्युदर 10-25 प्रतिशत तक है। इन सब बातों को देखते हुए यह अति आवश्यक हो जाता है कि नवजात बच्चों के रख-रखाव का समुचित प्रबन्ध कैसे करें, जिससे उन्हें अकाल मृत्यु से बचाकर, उष्ट्र पालन को और अधिक लाभकारी बनाया जा सके। पालन-पोषण से सम्बन्धित कुछ मुख्य जानकारियाँ निम्न प्रकार से हैं:

1. गर्भावस्था में देखभाल :

गर्भावस्था में बच्चे का सबसे अधिक विकास गर्भ के अन्तिम काल में होता है। अतः इस अवधि में गर्भित सांड को पर्याप्त मात्रा में चारा और दाना खिलाना चाहिए। मोटे तौर पर चराई के अलावा करीब 1.5-2.0 कि.ग्रा. दाना या फिर हरा चारा उपलब्धता के अनुसार खिलाया जाना चाहिये। अगर हरा चारा उपलब्ध नहीं हो तो विटामिन "ए" का टीका लगवाना अति आवश्यक है जिससे टोरडा/टोरडी की रतौंधी रोग से सुरक्षा की जा सके।

2. ब्याँत के अन्तिम दिनों में ग्याभिन सांड को टोले से अलग करना :

नवजात बच्चे की उचित देखभाल के लिए यह आवश्यक है कि गर्भित सांड को अन्तिम माह में चरने हेतु टोले से अलग कर खेत व ढ़ाणी के आस पास ही चरने भेजना चाहिए। प्रसव के अनुमानित समय के एक सप्ताह पूर्व से सांड का विशेष ध्यान रखें। ब्याँत के समय किसी तरह की कठिनाई होने पर पशुचिकित्सक की सहायता लेवें। जन्म स्थान साफ व सूखा होना चाहिए। बाड़े के फर्श को कीटाणुओं से मुक्त रखने के लिए 15 दिन पूर्व फर्श की गुड़ाई करके चूना और बी.एच.सी. पाउडर मिला देना चाहिए।

3. जन्म के समय बच्चों की देखभाल :

बच्चे के जन्म के साथ ही मुलायम कपड़े से नाक को साफ कर देना चाहिए ताकि वह ठीक से सांस ले सके। शरीर पर लगे लिसलिसे पदार्थ को भी कपड़े से साफ कर दें, जिससे रक्त का प्रवाह ठीक हो सके और बच्चे में स्फूर्ति आ जाये। नाड़े (नाल) को नाभि से करीब 4'' या 5'' की दूरी से काटना चाहिए एवं नाड़े पर टिन्चर आयोडीन या डिटॉल लगाना चाहिए।

(क) आमतौर पर जन्म के 1-2 घण्टे बाद टोरडा/टोरडी स्वयं मां का दूध पीने लग जाते हैं। ब्याने के 48 घण्टे बाद तक का दूध खींस कहलाता है। यह दूध बच्चे को अवश्य पिलायें। खींस में पोषक तत्वों के साथ-साथ रोग निरोधक एण्टीबॉडीज़ होती हैं, जो नवजात बच्चे की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाती हैं।

(ख) बच्चे को मां का पूरा खींस नहीं पीने देवें। परन्तु एक या दो थनों का ही खींस उसे देवें। क्योंकि दूध की मात्रा उसकी पाचन शक्ति से ज्यादा होगी तो उसे दस्त हो जायेंगे। खींस की मात्रा मल देखकर जानी जा सकती हैं। अगर मल पतला हो तो तीन थनों का दूध निकाल कर केवल एक थन का दूध पीने के लिए छोड़ें।

(ग) अधिकतर टोरडा/टोरडी का जन्म शीतकाल (दिसम्बर से मार्च) में ही होता है। कमजोर बच्चों को ठण्ड से बचाने के लिए रात्रि में नवजात बच्चों को किसी परकोटे में रखना चाहिए, जहाँ सीधी ठण्डी हवा न लगे।

(घ) ब्याँत के पश्चात् पहले चार-पांच दिन बच्चे और ऊँटनी का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। ऊँटनी के आहार का पूरा ध्यान रखें। बच्चे के जन्म के तीन दिन पश्चात् लगातार तीन दिन तक विटामिन ''ए'' की एक से डेढ़ मि.ली. एवं क्लोरमफेनिकॉल एक ग्राम लगवाना चाहिए। इसके लगाने से रतौंधी और दस्त होने की सम्भावना नहीं रहती।

(ङ) छः मास की उम्र तक डिवॉर्मिंग कर देनी चाहिए। इस हेतु ऐलबिन्डाजॉल (600 मि.ग्रा.) की एक बोलस देनी चाहिए।

(च) तीन माह के पश्चात् तिर्बसा (सर्रा) के बचाव हेतु टीका लगवाना चाहिए। ताकि इस भयंकर बीमारी से ऊँट के बच्चों को बचाया जा सके।

(छ) बच्चों को रोजाना थोड़ी देर के लिए ऊँटनी के साथ घूमने देना चाहिए, जिससे कि बच्चा थोड़ा-थोड़ा चरना सीख जाये एवं तन्दुरूस्त भी रहे। लगभग तीन माह के बाद टोरडा/टोरडी चरने लग जाता है। इस दौरान उसको मां का दूध अवश्य पिलावें, जिससे शारीरिक वृद्धि में बढ़ोतरी अच्छी हो।

नवजात टोरडा/टोरडी के लिए आहार सारणी :

क्र. सं.	आयु वर्ग	दूध	चारा (किलो प्रतिदिन)	दाना मिश्रण (किलो प्रतिदिन)
1.	जन्म पर	प्रथम दूध "खींस" अवश्य पिलावें, मात्रा मल को देखकर निर्धारित की जा सकती है	-	-
2.	दो माह पर	दूध पिलायें	थोड़ा हरा चारा खाने के लिए रखें	-
3.	छः माह पर	दूध अवश्य पिलावें	2.5	0.5
4.	6-12 माह पर	प्रायः 9 महीने पर दूध से हटा लिया जाता है	2.5	0.5
5.	1-2 वर्ष पर	-	5.0	1.0
6.	2-3 वर्ष पर	-	8.0	1.5

नवजात ऊँट के बच्चों को खींस एवं दूध पिलाकर, मातृहीन बच्चों को दूसरी ऊँटनी का दूध पिलाकर, विटामिन ए का टीका लगवाकर, बाह्य एवं आंतरिक परजीवी से बचाव, समय पर डिवॉर्मिंग कर, प्रतिकूल वातावरण से सुरक्षा कर मृत्युदर को 25-30 प्रतिशत की तुलना में 5 प्रतिशत तक लाया जा सकता है।

* * *

आलेख

एम. एस. सहानी

गोरख मल

यू. के. बिस्सा

एवं

निर्मला सैनी

प्रकाशक :

निदेशक

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

पोस्ट बॉक्स नं. 07,

बीकानेर-334001 (राजस्थान)

आलेख

एम. एस. सहानी

गोरख मल

यू. के. बिस्सा

एवं

निर्मला सैनी

मुद्रक : कल्याणी प्रिण्टर्स, बीकानेर. दूरभाष : 526890